11. व्याघ्रपथिककथा (बाघ और पथिक की कहानी)

अयं पाठः नारायणपण्डितरचितस्य हितोपदेशनामकस्य नीतिकथाग्रन्थस्य मित्रलाभनामकखण्डात् संकलितः।

यह पाठ नारायण पंडित द्वारा रचित हितोपदेश नामक नीतिकथा ग्रन्थ के मित्रलाभ नामक खण्ड से संकलित है।

हितोपदेशे बालकानां मनोरंजनाय नीतिशिक्षणाय च नानाकथाः पशुपक्षिसम्बद्धाः श्राविताः।

हितोपदेश में बालकों के मनोरंजन के लिए और नीति-शिक्षा के लिए अनेक कहानियाँ पशु-पक्षी से सम्बन्धित हैं।

प्रस्तुत कथायां लोभस्य दुष्परिणामः प्रकटितः।

प्रस्तुत कथा में लोभ के दुष्परिणाम प्रकट किया गया है।

पशुपक्षिकथानां मूल्यं मानवानां शिक्षार्थं प्रभूतं भवति इति एतादृशीभिः कथाभिः ज्ञायते।

पशु-पक्षी के कहानी का महत्व मानवों की शिक्षा हेतु अचूक होता है। कहानीयों से ज्ञान होता है।

और पथिक की कहानी)

कश्चित् वृद्धव्याघ्रः स्नातः कुशहस्तः सरस्तीरे ब्रुते- 'भो भोः पान्थाः। इदं सुवर्णकंकणं गृह्यताम्।'

कोई बूढ़ा बाघ स्नान कर कुश हाथ में लेकर तालाब के किनारे बोल रहा था- '' वो राही, वो राही ! यह सोने का कंगन ग्रहण करो।''

ततो लोभाकृष्टेन केनचित्पान्थेनालोचितम्- भाग्येनैतत्संभवति। किंत्वस्मिन्नात्मसंदेहे प्रवृŸार्न विधेया। यतः –

इसके बाद लोभ से आकृष्ट होकर किसी राही के द्वारा सोचा गया- भाग्य से ऐसा मिलता है। किन्तु यहाँ आत्म संदेह है। आत्म संदेह की स्थिति में कार्य नहीं करना चाहिए। क्योंकि-

अनिष्टादिष्टलाभेऽपि न गतिर्जायते शुभा।
यत्रास्ते विषसंसर्गोऽमृतं तदपि मृत्यवे।।

जहाँ अमंगल की आशंका होती है, वहाँ जाने से व्यक्ति को परहेज करना चाहिए। लाभ वहीं होता है जहाँ अनुकूल परिवेश होता है। क्योंकि विषयुक्त अमृत पीने से भी मृत्यु प्राप्त होती है।

किंतु सर्वत्रार्थार्जने प्रवृतिः संदेह एव। तन्निरूपयामि तावत्।' प्रकाशं ब्रुते- 'कुत्र तव कंकणम् ?'

लेकिन हर जगह धन प्राप्ति की इच्छा करना अच्छा नहीं होता । इसलिए तब तक विचार लेता हुँ।

सुनकर कहता है- 'कहाँ है तुम्हारा कंगन?'

व्याघ्रो हस्तं प्रसार्य दर्शयति।

बाघ हाथ फेलाकर दिखा देता है।

पन्थोऽवदत्- 'कथं मारात्मके त्वयि विश्वासः ?

पथिक ने पूछा- 'तुम हिंसक पर कैसे विश्वास किया जाए ?'

व्याघ्र उवाच- 'शृणु रे पान्थ ! प्रागेव यौवनदशायामतिदुर्वृत्त आसम्।

बाघ ने कहा- 'हे पथिक सुनो' पहले युवास्था में मैं अत्यंत दुराचारी था।

अनेकगोमानुषाणां वर्धान्मे पुत्रा मृता दाराश्च वंशहीनश्चाहम्।

अनेक गायों तथा मनुष्यों के मारने से मेरे पुत्र और पत्नि की मृत्यु हो गई और मैं वंशहीन हो गया।

ततः केनचिद्धार्मिकेणाहमादिष्टः – 'दानधर्मादिकं चरतु भवान्।'

इसके बाद किसी धर्मात्मा ने मुझे उपदेश दिया- '' आप दान और धर्म आदि करें।

तदुपदेशादिदानीमहं स्नानशीलो दाता वृद्धो गलितनखदन्तो कथं न विश्वासभूमिः ? मया च धर्मशास्त्राण्यधीतानि। शृणु –

उनके उपदेश से मैं इस समय स्नानशील , दानी हुँ तथा बुढ़ा और दंतविहीन हूँ, फिर कैसे विश्वासपात्र नहीं हुँ ? मेरे द्वार धर्मशास्त्र भी पढ़ा गया है। सुनो-

दरिन्द्रान्भर कौन्तेय ! मा प्रयच्छेश्वरे धनम्।

व्याधितस्यौषधं पथ्यं, नीरुजस्य किमौषधेः।।

हे कुन्तीपुत्र ! गरीबों को धन दो, धनवानों को धन मत दो । रोगी को दवा की जरूरत होती है। नीरोगी को दवा की कोई जरूरत नहीं होती है।

अन्यच्च –

और दूसरी बात यह है कि-

दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे।

देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्विकं विदुः ।।

दान देना चाहिए। दान उसी को देना चाहिए। जिससे कोई उपकार नहीं कराना हो, उचित जगह, उपयुक्त समय और उपयुक्त व्यक्ति को दिया हुआ दान साŸिवक दान होता है।

तदत्र सरसि स्नात्वा सुवर्णकंकणं गृहाण।

तुम यहाँ तालाब में स्नानकर सोने का कंगन ले लो।

ततो यावदसौ तद्वचः प्रतीतो लोभात्सरः स्नातुं प्रविशति। तावन्महापंके निमग्नः पलायितुमक्षमः।

उसके बाद उसकी बातों पर विश्वास कर ज्योंही वह लोभ से तालाब में स्नान के लिए प्रविष्ठ हुआ त्योंहि गहरे किचड़ में डुब गया और भागने में असमर्थ हो गया।

पंके पतितं दृष्ट्वा व्याघ्रोऽवदत् – 'अहह, महापंके पतिताऽसि। अतस्त्वामहमुत्थापयामि।'

उसको किचड़ में फंसा देखकर बाघ बोला- अरे रे, तुम गहरे किचड़ में फंस गये हों। इसलिए मैं तुमको निकाल देता हुँ ।

इत्युक्त्वा शनैः शनैरुपगम्य तेन व्याघ्रेण धृतः स पन्थोऽचिन्तयत् –

यह कहकर धीरे-धीरे उसके निकट जाकर उस बाघ ने उस पथिक को पकड़ लिया। उस पथिक ने सोचा-

अवशेन्द्रियचित्तानां हस्तिस्नानमिव क्रिया।

दुर्भगाभरणप्रायो ज्ञानं भारः क्रियां विना।।

जिस व्यक्ति की इन्द्रियाँ और मन अपने वश में नही हो, उसकी सारी क्रियाएँ हाथी के स्नान के समान हैं। जिस प्रकार बंध्या स्त्री का पालन पोषण बेकार है, उसी प्रकार क्रिया के बिना ज्ञान भार स्वरूप है।

इति चिन्तयन्नेवासौ व्याघ्रेण व्यापादितः खादितश्च। अत उच्यते –

ऐसा सोचता हुआ पथिक बाघ से पकड़ा गया और खाया गया। इसलिए कहा जाता है-

कंकणस्य तु लोभेन मग्नः पंके सुदुस्तरे।

वृद्धव्याघ्रेण संप्राप्तः पथिकः स मृतो यथा।।

जिस प्रकार कंगन के लोभ में पथिक गहरे किचड़ में फँस गया तथा बूढ़े बाघ द्वारा पकड़कर मार दिया गया।

1. व्याघ्रपथिक कथा से क्या शिक्षा मिलती है ? अथवा, व्याघ्रपथिक कथा में मूल संदेश क्या है ?

उत्तर⇒ नारायण पण्डित विरचित हितोपदेश के नीतिकथाग्रन्थ के मित्रलाभखण्ड से ली गयी कथा 'व्याघ्रपण्डित' है । इस कथा में एक पथिक वृद्ध व्याघ्र द्वारा दिये गये प्रलोभन में पड़ जाता है। वृद्ध व्याघ्र हाथ में सुवर्णकंकण लेकर पथिक को अपनी ओर आकृष्ट करता है। पथिक निर्धन होने के बावजूद व्याघ्र पर विश्वास नहीं करता । तब व्याघ्र द्वारा सटीक तर्क दिये जाने पर पथिक संतुष्ट

होकर कंकण ले लेना उचित समझता है। व्याघ्र द्वारा स्नान कर ग्रहण करने की बात स्वीकार कर पथिक महाकीचड़ में गिर जाता है और व्याघ्र द्वारा मारा जाता है। इस कथा में संदेश और शिक्षा यही है कि नरमक्षी प्राणियों पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिए और अपनी किसी भी समस्या का समाधान ऐसे व्यक्ति द्वारा नजर आये तब भी उसके लोभ में नहीं फँसना चाहिए

2. व्याघ्रपथिक कथा पाठ का पाँच वाक्यों में परिचयं दें।

उत्तर⇒ यह कथा नारायणपंडित रचित प्रसिद्ध नीतिकथाग्रन्थ 'हितोपदेश' के प्रथम भाग 'मित्रलाभ' से संकलित है । इस कथा में लोभाविष्ट व्यक्ति की दुर्दशा का निरूपण है । आज के समाज में छल-छद्म का वातावरण विद्यमान है जहाँ अल्प वस्तु के लोभ से आकृष्ट होकर लोग अपने प्राण और सम्मान से वंचित हो जाते हैं। यह उपदेश इस कथा से मिलता है कि वंचकों के चक्कर में न पड़ें।

3. वृद्ध बाघ ने पथिकों को फंसाने के लिए किस तरह का भेष रचाया ?

उत्तर⇒ वृद्ध बाघ ने पथिकों को फंसाने के लिए एक धार्मिक का भेष रचाया । उसने स्नान कर और हाथ में कुश लेकर तालाब के किनारे पथिकों से बात कर उन्हें दानस्वरूप सोने का कंगन पाने का लालच दिया ।

4. पथिक वृद्ध बाघ की बातों में क्यों आ गया ?

उत्तर⇒ पथिक ने सोने के कंगन की बात सुनकर सोचा कि ऐसा भाग्य से ही मिल सकता है, किन्तु जिस कार्य में खतरा हो उसे नहीं करना चाहिए। फिर लोभवश उसने सोचा कि धन कमाने के कार्य में खतरा तो होता ही है। इस तरह वह लोभ से वशीभूत होकर बाघ की बातों में आ गया।

5. वृद्ध बाघ पथिक को पकड़ने में कैसे सफल हुआ था ? अथवा, बाघ ने पथिक को पकड़ने के लिए क्या चाल चली ?

उत्तर⇒ वृद्ध बाघ ने एक धार्मिक का भेष रचकर तालाब के किनारे पथिकों को सोने का कंगन लेने के लिए कहा। उस तालाब में अधिकाधिक कीचड़ था। एक लोभी पथिक उसकी बातों में आ गया। बाघ ने लोभी पथिक को स्वर्ण कंगन लेने से पहले तालाब में स्नान करने के लिए कहा। उस बाघ के बात पर विश्वास कर जब पथिक तालाब में घूसा, वह अधिकाधिक कीचड़ में धंस गया और बाघ ने उसे पकड़ लिया।

6. पथिक को फंसाने के लिए वृद्ध बाघ ने क्या तर्क दिया ?

उत्तर⇒ पथिक लोभी तथा चालाक था। उसे फंसाने के लिए वृद्ध बाघ ने कहा कि मैं युवावस्था में अति हिंसक था। अनेक गायों और मनुष्यों का वध किया करता था। परिणामस्वरूप मेरे पत्र और पत्नी मर गए और मैं अब वंशहीन हैं। किसी धार्मिक व्यक्ति का उपदेश का पालन कर अब मैं स्वच्छ हृदयवाला, दानी और गले हुए नख-दंतवाला वृद्ध हूँ। इसलिए मुझपर विश्वास किया जा सकता है ।

7. धार्मिक व्यक्ति ने वृद्ध बाप को क्या उपदेश दिया ?

उत्तर⇒ वद्ध बाघ अतिदराचारी था। यवावस्था में अनेक गायों और मनष्यों के वध करने के पाप के कारण वह नि:संतान और पत्नीविहीन हो गया था। तब एक धार्मिक व्यक्ति ने पापमुक्त होने के लिए बाघ को उपदेश दिया कि आप दान-पुण्य करें।

8.नारायण पंडित रचित व्याघ्रपथिककथा पाठ का मल उद्देश्य क्या है ?

उत्तर⇒ व्याघ्रपथिककथा का मूल उद्देश्य यह है कि हिंसक जीव अपने स्वभाव को नहीं छोड़ सकता। इस कथा के द्वारा नारायणपंडित हमें यह शिक्षा देते हैं कि दुष्टों की बातों पर लोभ में आकर विश्वास नहीं करना चाहिए । सोच-समझकर ही काम करना चाहिए। इस कथा का उद्देश्य मनोरंजन के साथ व्यावहारिक ज्ञान देना है।

9.'व्याघ्र-पथिक कथा को संक्षेप में अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर⇒ यह मेरा है वह दूसरों का है अर्थात् यह मेरा परिवार है वह दूसरे का परिवार है, ऐसा संकुचित बुद्धिवाले कहते हैं, किन्तु उदार विचार वाला पुरुष के लिए तो समस्त संसार ही अपना कुटुम्ब है। यह भारत की नीति है और इस नीति से आज संसार में शांति स्थापित किया जा सकता है।

IMPORTANT OBJECTIVE QUESTION

1. 'व्याघ्र पथिक कथा' पाठ के रचयिता कौन हैं।

(A) विष्णु शर्मा

(B) नारायण पण्डित

(C) दण्डी

(D) बाणभट्ट

Ans – (B)

2. 'व्याघ्रपथिककथा' पाठ कहाँ से लिया गया है।

(A) पंचतंत्र

(B) हितोपदेश

(C) भारत महिमा

(D) अलसकथा

Ans – (B)

3. "दरिद्रान्भर कौन्तेय! मा नीरुजस्य किमौषधे: "-पद्य किस पाठ से संकलित है?

(A) व्याघ्र पथिक कथा

(B) कर्मवीर कथा

(C) शास्त्रकारा:

(D) विश्वशान्ति:

Ans – (A)

4. 'हितोपदेश' के रचयिता कौन हैं?

(A) नारायण पण्डित

(B) विष्णुशर्मा

(C) चाणक्य

(D) विद्यापति

Ans – (A)

5. 'हितोपदेश' में कहानियाँ किससे संबंधित है?

(A) मानव

(B) दानव

(C) देवता

(D) पशु-पक्षी Ans (D)

6. अनिष्टादिष्टलाभेऽपि ..... तदपि मृत्यवे ।। यह श्लोक कहाँ से लिया गया है?

(A) भारत महिमा

(B) व्याघ्रपथिक कथा

(C) नीतिश्लोक

(D) विदूर नीति

Ans – (B)

7. बाघ हाथ फैलाकर क्या दिखाता है?

(A) कंगन

(B) रुपया

(C) कलम

(D) धन

Ans – (A)

8. “सोने का कंगन ग्रहण करो!" ऐसा कौन बोल रहा था ?

(A) बाघ

(B) पथिक

(C) पशु

(D) गाय

Ans – (A)

9. कौन कीचड़ में फँस गया?

(A) बाघ

(B) सिंह

(C) साँप

(D) पथिक

Ans – (D)

10. बूढ़ा बाघ क्या देना चाहता था?

(A) चाँदी का कंगन

(B) साइकिल

(C) सुवर्णकंगन

(D) रुपया

Ans – (C)

11. पथिक कहाँ फँस गया?

(A) सरोवर में

(B) नदी में

(C) कुआँ में

(D) कीचड़ में

Ans – (D)

12. पथिक किसके द्वारा पकड़ा और खाया गया?

(A) बाघ

(C) मीन

(B) सिंह

(D) सर्प

Ans – (A)

13. कौन स्नानकर हाथ में कुश लेकर सरोवर के किनारे बोल रहा था?

(A) भालु

(B) बाघ

(C) मृग

(D) पथिक

Ans – (B)

14. मैं वंशहीन हूँ" किसने कहा?

(A) पथिक

(B) राजा

(C) बाघ

(D) सर्प

Ans – (C)

15. किसका भरण-पोषण व्यर्थ है?

(A) विधवा

(B) बाघ

(C) पथिक

(D) हाथी

Ans – (A)

16. ..... भारः क्रिया बिना ।।

(A) दानम्

(B) ज्ञानम्

(C) ग्रंथ

(D) नृत्यम्

Ans – (B)

17. भाग्य से ही संभव है!" ऐसा किसने सोचा?

(A) पत्नी

(B) माता

(C) पिता

(D) पथिक

Ans – (B)

18. विष के संपर्क से अमृत किसका कारण बन जाता है?

(A) दोष

(B) गुण

(C) जीवन

(D) मृत्यु

Ans – (D)

19. युवावस्था में दुराचारी कौन था?

(A) मानव

(B) देवता

(C) बाघ

(D) पथिक

Ans – (C)

20. दान किसे देना चाहिए?

(A) राजा

(B) मंत्री

(C) बाघ

(D) गरीब

Ans – (D)

21. किसे धन नहीं देना चाहिए?

(A) धनिक

(B) गरीब

(C) मंत्री

(D) किसान

Ans – (A)

22. दवा किसका मित्र है?

(A) डाक्टर

(C) बाघ

(B) रोगी

(D) पथिक

Ans – (B)

23. क्रिया के बिना क्या बोझ होता है?

(A) विवेक

(B) शास्त्र

(C) शील

(D) ज्ञान

Ans – (D)

24. किसके बिना ज्ञान बोझ के समान है?

(A) क्रिया

(B) ग्रंथ

(C) पुस्तक

(D) खेल

Ans – (A)

25. अविश्वासी पात्र पर विश्वास करने से क्या होता है?

(A) लाभ

(B) हानि

(C) ज्ञानी

(D) मूर्ख

Ans – (B)

26. 'दानधर्मादिकं चरतु भवान्।' बाघ को यह उपदेश किसने दिया?

(A) पथिक

(B) धार्मिक

(C) विद्वान्

(D) ऋषि

Ans – (B)

27. बूढ़े बाघ के हाथ में क्या था?

(A) सोने के कंगन

(B) चाँदी का कंगन

(C) ताँबे का कंगन

(D) लकड़ी के कंगन

Ans – (A)

28. 'व्याघ्रपथिक कथा' पाठ में किसके दुष्परिणाम का वर्णन किया गया है?

(A) क्रोध

(C) मोह

(B) लोभ

(D) काम

Ans – (B)

29. 'इदं सुवर्ण कङ्कणं गृह्यताम्!' किसने कहा?

(A) पथिक

(C) बाघ

(B) कथाकार

(D) दानी

Ans – (C)

30. 'कथं मारात्मके त्वयि विश्वासः?' किसकी उक्ति है?

(A) बाघ

(B) पथिक

(C) धार्मिक

(D) लेखक

Ans – (B)

31. 'व्याघ्र - पथिक कथा' पाठ में किसके लिए कौन्तेय शब्द का प्रयोग हुआ है?

(A) पथिक

(B) बाघ

(C) अर्जुन

(D) युधिष्ठिर

Ans – (B)

32. 'अहह, महापंके पतितोऽसि।' किसने कहा?

(A) बाघ

(B) पथिक

(C) धार्मिक

(D) साधु

Ans – (A)

33. पथिक स्नान करने कहाँ गया?

(A) तालाब

(B) नदी

(C) झरना

(D) समुद्र

Ans – (A)

34. 'व्याघ्रपथिक-कथा' हितोपदेश के किस भाग से संकलित है?

(A) सुहृद् भेद

(C) संधि

(B) विग्रह

(D) मित्रलाभ

Ans – (D)